आधुनिक साहित्यकार भूमिका द्विवेदी अश्क का साहित्य और समाज

मनीषा मोहन लोंढे

शोधार्थी, हिंदी विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, कर्वे रोड, पुणे।

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17263791

ABSTRACT:

आधुनिक हिंदी साहित्य में भूमिका द्विवेदी अश्क एक महत्वपूर्ण लेखिका हैं, जिनका साहित्य समकालीन समाज की जटिलताओं, विशेष रूप से शहरी और ग्रामीण परिवेश में महिला जीवन के संघर्षों का यथार्थवादी चित्रण करता है। यह अध्ययन उनके साहित्य और समाज के बीच के गहरे संबंध का विश्लेषण करता है। उनका लेखन केवल कहानियाँ नहीं सुनाता, बल्कि समाज में व्याप्त रूढ़िवाद, लैंगिक असमानता, और मानवीय संबंधों की विसंगतियों को भी उजागर करता है। उनकी प्रमुख रचनाओं जैसे 'खाली तमंचा' और 'बोहनी' के माध्यम से हम देखते हैं कि कैसे वे महिलाओं की मनोवैज्ञानिक पीड़ा, उनके आत्म-सम्मान के लिए संघर्ष, और सामाजिक अपेक्षाओं के बोझ को गहराई से चित्रित करती हैं। यह शोध यह भी रेखांकित करता है कि उनका साहित्य किस प्रकार सामाजिक बदलाव और आत्म-बोध का एक शक्तिशाली माध्यम है।

भूमिका द्विवेदी अश्क का साहित्यिक योगदान न केवल महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि साहित्य किस प्रकार सामाजिक चेतना को जागृत कर सकता है। उनका लेखन आधुनिक समाज का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है, जो पाठकों को उनके अपने और उनके आसपास के जीवन को नए नज़रिए से देखने में मदद करता है।

KEYWORDS:

भूमिका द्विवेदी अश्क, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक यथार्थवाद, लैंगिक असमानता, खाली तमंचा.

प्रस्तावना:

साहित्य और समाज का संबंध अत्यंत गहरा और अटूट है। साहित्य जहाँ एक ओर समाज का दर्पण होता है, वहीं दूसरी ओर यह समाज को दिशा और गति भी प्रदान करता है। इसी परिप्रेक्ष्य में, आधुनिक साहित्यकार भूमिका द्विवेदी अश्क का लेखन विशेष महत्व रखता है। उन्होंने अपने ससुर, प्रसिद्ध साहित्यकार उपेन्द्रनाथ अश्क की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, आधुनिक समाज की चुनौतियों और जटिलताओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि भूमिका द्विवेदी अश्क का साहित्य समकालीन समाज को किस प्रकार चित्रित करता है। हम उनके लेखन में महिला जीवन के यथार्थ चित्रण, सामाजिक विसंगतियों, और मानवीय संबंधों के सूक्ष्म विश्लेषण पर ध्यान केंद्रित करेंगे। यह अध्ययन उनकी भाषा, शैली और विषय-वस्तु के आधार पर उनके साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन करेगा। इस विश्लेषण के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार उनका साहित्य सामाजिक चेतना को जागृत करता है और समाज को अपनी कमियों और खूबियों को पहचानने में मदद करता है। यह शोध हिंदी साहित्य में उनके स्थान और महत्व को स्थापित करने के साथ-साथ साहित्य के सामाजिक दायित्व को भी स्पष्ट करेगा।

1. अध्ययन का उद्देश्य:

» • समग्र साहित्य का अध्ययन करके उनके साहित्य में वैचारिक गहराई, सामाजिक और रचनात्मक दृष्टिकोण को समझना।

» • विशेषकर साहित्य में स्त्री अस्मिता, आत्मनिर्भरता, सामाजिक और मानसिक संघर्षों को जिस प्रकार प्रस्तुत किया गया है, उसका अध्ययन करना।

2. साहित्य की परिभाषा:

साहित्य का सबसे सरल अर्थ है 'साथ सहित' यानी जो कल्याणकारी हो, जो समाज के लिए हितकारी हो। इसमें वे सभी रचनाएँ शामिल हैं जो हमें शिक्षित करती हैं, हमारा मनोरंजन करती हैं, और हमें सोचने पर मजबूर करती हैं।

2.1 प्रमुख परिभाषाएँ और दृष्टिकोण

» ज्ञान का संचित कोष: साहित्य मानव के अनुभवों, विचारों और भावनाओं का एक विशाल भंडार है। यह एक पीढ़ी के ज्ञान को दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने का माध्यम है। इसमें इतिहास, संस्कृति, विज्ञान और दर्शन का सार समाहित होता है।

» समाज का दर्पण: साहित्य अपने समय के समाज का प्रतिबिंब होता है। यह समाज की अच्छाइयों, बुराइयों, संघर्षों और आशाओं को दिखाता है। मुंशी प्रेमचंद का साहित्य इसका सबसे बड़ा उदाहरण है, जहाँ उन्होंने ग्रामीण भारत की समस्याओं को उजागर किया।

» कलात्मक अभिव्यक्ति: साहित्य केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि इसे कलात्मक और रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत करता है। इसमें कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और निबंध जैसी विधाएँ शामिल हैं। एक लेखक अपनी भाषा और शैली के माध्यम से भावनाओं को जीवंत करता है।

» मानवीय संवेदनाओं का संचार: साहित्य हमें दूसरों की भावनाओं को समझने में मदद करता है। जब हम किसी पात्र की खुशी या दुख को महसूस करते हैं, तो हम उससे भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं।

» मनोरंजन और प्रेरणा: साहित्य का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य मनोरंजन भी है। यह हमें कल्पना की दुनिया में ले जाता है और जीवन की नीरसता से मुक्ति दिलाता है। साथ ही, यह हमें प्रेरित भी करता है। कई महान साहित्यकारों की रचनाएँ हमें जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

3. भूमिका द्विवेदी अश्क जी की कुछ उल्लेखनीय कहानियाँ और समाज:

भूमिका जी का 'खाली तमंचा' कहानी संग्रह ग्यारह कहानियों का है। संग्रह में विभिन्न विषयों पर आधारित कहानियाँ शामिल हैं। इनमें स्त्री पीड़ा, सामाजिक विमर्श, और परिवार के भीतर की हिंसा, रिश्तों की जटिलता, मनोवैज्ञानिक संघर्ष, यथार्थवाद, मानवीय भावनाओं का गहरा चित्रण जो समाज के इन अलग-अलग पहलुओं को उजागर करती हैं। इनमें से कुछ उल्लेखनीय कहानियों का अवलोकन इस प्रकार है:

3.1 राज़दारी:

कहानी की नायिका एक कम उम्र की महिला है जिसकी शादी एक प्रौढ़ पुरुष से होती है। पति का एक युवक बेटा है, जो अपनी सौतेली माँ के प्रति आकर्षित होता है। समय के साथ दोनों के बीच भावनात्मक और शारीरिक तनाव पनपता है, लेकिन समाज, नैतिकता और 'राज़दारी' के नाम पर सभी कुछ छिपा दिया जाता है।

'राज़दारी' यानी रहस्य की रखवाली। यह कहानी रिश्तों में छिपे उन रहस्यों की पड़ताल करती है जिन्हें समाज न देखना चाहता है, न स्वीकार करना। राज़दारी कहानी उन राज़ों की पड़ताल करती है जिन्हें समाज न स्वीकारता है, न समझना चाहता है। यह न केवल एक विवादास्पद रिश्ते की कहानी है, बल्कि एक चुप्पी है।

3.2 दस रुपये का तेज पत्ता:

कहानी केतन नामक एक ऐसे व्यक्ति की है, जो स्वयं को साहित्यकार मानता है लेकिन जिसका व्यवहार और नैतिकता संदिग्ध है। उसे उसके "गॉडफादरों" द्वारा साहित्य जगत में स्थापित करने और पुरस्कार दिलाने के प्रयास किए जाते हैं, लेकिन वह अपनी नीच प्रवृत्तियों को नहीं छोड़ता। कहानी में उसके दिल्ली प्रवास, विभिन्न लोगों से उसका शोषणकारी व्यवहार और खास तौर पर कियारा नामक धनी लड़की के साथ उसके संबंध का वर्णन है। केतन कियारा को अपने आर्थिक लाभ के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश करता है, जिसमें एक विनोदी लेकिन अंततः व्यर्थ सामानों की सूची बनवाना भी शामिल है। जिसमें केतन दस रुपये के तेज पत्ते की मांग कियारा से करता है। कियारा जो पश्चिमी मूल्यों में पली-बढ़ी है, केतन की इन हरकतों से परेशान होकर उससे दूरी बना लेती है। कहानी के अंत में, केतन को उसके किए का फल मिलता है, जब शेरी उसे कियारा से दूर रहने की चेतावनी देता है और वह अकेला रह जाता है।

"दस रुपये का तेज पत्ता" एक प्रतीक के रूप में आता है, जो अनावश्यक चीजों पर खर्च होने वाले धन को दर्शाता है, खासकर उन लोगों पर जो इसके हकदार नहीं हैं।

कहानी समाज के मानवीय स्वभाव का चित्रण, साहित्य जगत पर

व्यंग्य, सामाजिक आर्थिक विषमता, संबंधों की जटिलता विभिन्न वर्गों खासकर दिल्ली जैसे महानगर में रहने वाले लोगों के बीच के संबंधों पर टिप्पणी करती है, जहाँ कुछ लोग दूसरों का शोषण करते हैं और कुछ लोग अपनी मजबूरी में ऐसे शोषकों पर निर्भर रहते हैं।

"दस रुपये का तेज पत्ता" एक बहुआयामी कहानी है जो मानवीय कमजोरियों, सामाजिक पाखंड पर प्रकाश डालती है, जिसमें व्यंग्य और यथार्थवाद का सुन्दर समन्वय है।

3.3 जनाजा:

"जनाजा" कहानी आफताब और शबनम के इर्द-गिर्द घूमती है। कहानी में, दो लोग आफताब और शबनम की हरकतों के बारे में बात कर रहे होते हैं। आफताब एक धोखेबाज और बेईमान व्यक्ति के रूप में दिखाया गया है, जिसने शबनम को अपने जाल में फंसाया और उसके साथ बुरा व्यवहार किया। शबनम, जो एक सीधी-सादी और भोली लड़की थी, आफताब के धोखे का शिकार हो जाती है। आफताब शबनम से 12 साल बड़ा था। वह उससे मीठी-मीठी बातें करके और कविताएँ सुनाकर फँसाता है।

शबनम दिल्ली में मन लगाने के लिए आई थी क्योंकि वह किसी सदमे में थी। आफताब ने उसे धोखे से अपने जाल में फंसा लिया। शबनम गर्भवती थी। आफताब द्वारा दिए गए धोखे और पीड़ा के कारण वह कोमा में चली गई और अंततः उसकी मृत्यु हो गई। उसकी मौत के बाद भी आफताब पर कोई फर्क नहीं पड़ा और वह अपनी अय्याशी भरी जिंदगी में मस्त रहा। कहानी में यह भी बताया गया है कि आफताब ने शबनम के साथ-साथ उसकी माँ के साथ भी गलत काम किया था।

कहानी के अंत में, शबनम का जनाजा निकलता है और उसे दफनाया जाता है। आफताब को उसके कर्मों के लिए कोसा जाता है और शबनम के लिए दुआएं मांगी जाती हैं।

कहानी प्रेम, विश्वासघात, अन्याय, सामाजिक पाखंड और स्त्री के शोषण जैसे सार्वभौमिक विषयों को छूती है, जो इसे आज भी प्रासंगिक बनाते हैं।

3.4 खाली तमंचा:

यह कहानी एक ऐसी लड़की की है जो शतरंज का खेल जीतने पर इनाम में एक तमंचा मांगती है। उसकी यह अनोखी मांग उसके अंदर की गहरी हताशा और सामाजिक बंधनों से मुक्ति की इच्छा को दर्शाती है। वह समाज की रूढ़िवादी सोच, विशेषकर अपने पिता की पितृसत्तात्मक मानसिकता से पीड़ित है, जहाँ लड़कियों को लड़कों से कमतर समझा जाता है और उनके सपनों व अधिकारों को दबाया जाता है।

जब वह तमंचा मांगती है, तो उसके आस-पास के लोग, खासकर उसका भाई और दोस्त, उसे समझाते हैं कि असली जवाब या असली हथियार तमंचा नहीं है। वे उसे बताते हैं कि उसकी वास्तविक शक्ति और स्वतंत्रता का मार्ग शिक्षा में है। शिक्षा ही वह माध्यम है जिससे वह अपने पिता और समाज की पुरानी सोच को चुनौती दे सकती है, आत्मनिर्भर बन सकती है और अपने हक के लिए लड़ सकती है।

कहानी शिक्षा को स्त्री सशक्तिकरण के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रस्तुत करती है। सामाजिक रूढ़िवादिता यह पितृसत्तात्मक समाज की उन बाधाओं को उजागर करती है जिनसे स्त्रियाँ जूझती हैं। नायिका महसूस करती है। यह इस बात का भी प्रतीक है कि केवल हिंसा या बाहरी बल से समस्या का समाधान नहीं होता, बल्कि आंतरिक शक्ति और ज्ञान ही मायने रखता है।

निष्कर्ष:

भूमिका द्विवेदी अश्क जी की कहानियाँ सामाजिक मुद्दों की एक जटिल श्रृंखला को गहराई से दर्शाती हैं, जिसमें नारीवादी संघर्ष, सामाजिक वास्तविकताएँ, और असमानता की जटिल गतिशीलता शामिल है। यह मानवीय स्थिति की जांच कर सामाजिक-राजनीतिक ताने-बाने के भीतर महत्वपूर्ण योगदान देता है, विशेष रूप से संवेदनशील विषयों के साथ इसके गहरे जुड़ाव के कारण यह संग्रह मौजूदा सामाजिक और साहित्यिक विमर्शों में सार्थक योगदान देता है।

"राज़दारी," "खाली तमंचा," "लेडी पिकासो," और "सातवां आसमान" जैसी कहानियों में देखा जा सकता है, जो दर्शाती हैं कि कैसे महिलाओं को वस्तुनिष्ठ किया जाता है, उनकी आकांक्षाओं को दबाया

जाता है, और उनकी स्वतंत्रता को सामाजिक मानदंडों और पारिवारिक दबावों से कम किया जाता है। संग्रह लगातार रूढ़िवादी विचारधाराओं की पृष्ठभूमि के खिलाफ आत्म-सम्मान, पहचान और सशक्तिकरण के लिए महिलाओं के संघर्षों पर प्रकाश डालता है।

"दस रुपये का तेज पत्ता," "जनाजा," और "भगवान सत्यनारायण का प्रसाद" जैसी कहानियाँ धोखे, साहित्यिक दुनिया और राजनीति जैसे संस्थानों के भीतर नैतिक भ्रष्टाचार, और कृतघ्नता के दर्दनाक परिणामों को उजागर करती हैं। यह संग्रह सत्ता संरचनाओं और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं का यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है, जिसमें "रेड लाइट वर्सेज़ रेड लाइट एरिया," "दांव" और "हीरामन चौधरी" जैसी कहानियाँ दर्शाती हैं कि राजनीतिक शक्ति का दुरुपयोग कैसे व्यक्तिगत लाभ और शोषण के लिए किया जा सकता है। ये कहानियाँ अक्सर शक्तिशाली लोगों के हाथों कमजोरों के पीड़ित होने का चित्रण करती हैं, जो समाज की कठोर वास्तविकताओं को दर्शाती हैं।

इसके अतिरिक्त, "खाली तमंचा" जैसी कहानियाँ शिक्षा को सशक्तिकरण के एक सच्चे मार्ग के रूप में प्रस्तुत करती हैं, जो व्यक्तियों को मानदंडों को चुनौती देने, आत्मनिर्भरता प्राप्त करने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम बनाती हैं। यह ज्ञान और व्यक्तिगत दृढ़ संकल्प की परिवर्तनकारी शक्ति में विश्वास का सुझाव देता है। अंततः, संग्रह समाज की बहुआयामी चुनौतियों पर एक सुसंगत टिप्पणी बन जाता है, क्योंकि यह पितृसत्तात्मक सोच, सामाजिक अन्याय, आर्थिक असमानता और पाखंड को महिलाओं के सशक्तिकरण और व्यक्तिगत संघर्षों के प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।

संदर्भ:

1. भूमिका द्विवेदी अश्क, "बोहनी", भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली, 2017
2. भूमिका द्विवेदी अश्क, "खाली तमंचा तथा अन्य कहानियाँ", प्रथम हिंदी संस्करण, हिंदी पॉकेट बुक्स द्वारा, 2020
3. भूमिका द्विवेदी अश्क, "पितृपक्ष", इण्डियानेट बुक्स प्रकाशन, दिल्ली, 2021
4. भूमिका द्विवेदी अश्क, "दाँव एवं अन्य राजनैतिक कहानियाँ", इंक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2024.

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.